कई बीमारियों की एक दवा: ग्वारपाठा (घृतकुमारी) "एलोय वेरा लिन."

विशेषतायें एवं लाभ:

- ग्वारपाठा अथवा घृतकुमारी के पत्तों को औषधि निर्माण हेतु उपयोग में लाया जाता है।
- पत्तों से रस का निर्माण एवं इसके पश्चात् एलूआ तैयार किया जाता है जिसमें **"एलोइन"** नामक क्रियाशील तत्व प्राप्त होता है। इसका मुख्य घटक **बारबलोइन** होता है। इसके अलावा एलोइन में बी-बारबेलोइन, आइसो-बारबेलोइन, एलो इमोडीन, राल, गैलिक एसिड तथा सुगंधित तेल भी होता है।
- ग्वारपाठा का उपयोग यकृत, प्लीहा वृद्धि, कष्टार्तव, ज्वर, चर्मरोग, दांत दर्द, चोट लगने पर, अग्नि दग्ध, कफ विकार, खांसी, उदरशूल, कब्ज एवं सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण में किया जाता है।

कृषि तकनीक:

मृदा:

- ग्वारपाठा की खेती असिंचित तथा सिंचित दोनों तरह की भूमि पर की जा सकती है।
- भूमि में पानी का ठहराव नहीं रहना चाहिए एवं जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

पौधरोपण:

- ग्वारपाठा की बिजाई इसके कंदों/ट्यूबर्स से की जाती है।
- पुराने पौधों की जड़ों के पास से छोटे पौधे जड़ सहित निकाल कर बड़े खेत में लगाए जाते हैं।
- छोटे पौधों का रोपण वर्षा काल अर्थात् जुलाई-अगस्त में किया जाता है।
- खेत में एक मीटर में इसकी दो कतारें लगाकर एक मीटर जगह खाली छोड़कर पुन: एक मीटर में दो कतारे लगाई जाती हैं।
- प्रत्येक खंड के बाद एक मीटर जगह खरपतवार निकालने तथा पत्तियों को काटने के लिए रखते हैं।

खरपतवार नियंत्रण:

- प्रत्येक माह में खरपतवार निकालते रहना चाहिए।

कटाई:

- पौधे लगाने के एक वर्ष बाद हर तीन माह में प्रत्येक पौधे की 3-4 पत्तियों को छोड़कर शेष सभी पत्तियों को तेज धारदार हंसिये से काट लेना चाहिए।
- पत्तियों को इकट्ठा कर बाजार में बेच देते हैं।

आय:

- वर्ष भर में प्रति एकड़ 5000-6000 किलो ताजी पत्तियॉ प्राप्त होती हैं जिसका भाव लगभग 3 से 4 रूपये प्रति किलोग्राम होता है।
- इससे किसान 15000-20000 रूपये प्रति एकड़ प्रतिवर्ष की आमदानी प्राप्त कर सकते हैं।

संकलन:
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005